उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्मार्ट फोन के उपयोग से संवेगात्मक वृद्धि और शैक्षणिक प्रभावों का अध्ययन

प्रवेश कुमार
शोधार्थी
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सारांश

कोरोना वायरस के संक्रमण की वजह से स्कूलों में कक्षाएं नहीं लग पा रही हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से छात्रों को पढ़ाई कराई जा रही है। भारत जैसे देश में इस भयानक महामारी की वजह से पहले ही अभूतपूर्व स्तर पर चिंताएं भारतीय परिवार झेल रहे हैं। कहीं किसी की नौकरी चली गई है, तो कहीं किसी की जान चली गई है. या लोगों की तबियत ख़राब है। कई परिवार ख़ाने पीने की कमी भी झेल रहे हैं। ऐसे समय में उनके ऊपर एक ये चिंता असर पर रही है कि उनके बच्चे क्लास अटेंड नहीं कर पा रहे हैं।ये सोचने की ज़रूरत है कि इस सब का बच्चों पर क्या मानसिक असर होगा?"इसके अलावा यह भी अध्ययन आवश्यक है, कि मोबाइल के ज्यादा प्रयोग से विद्यार्थियों में किस प्रकार की मानसिक विकृति सामने आ रही है।अध्ययन में स्मार्ट फोन के उपयोग के कारण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मोबाइल लत, उनकी संवेगात्मक वृद्धि के प्रभावों का परीक्षण किया गया है।महामारी के दौरान हो रही आनलाइन एजूकेशन व्यवस्था के कारण स्कूली विद्यार्थियों को मोबाइल फोन मुहैया कराना हर परिवार की जिम्मेदारी में शामिल हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक वृद्धि और मोबाइल की लत के बारे में अध्ययन किया गया है। अध्ययन सर्वेक्षण विवरणात्मक शोध प्रविधि के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच में किया गया है। अध्ययन में यह बात सामने आयी है कि मोबाइल के ज्यादा उपयोग से विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। विद्यार्थियों नवीन प्रकार के संवेगों को न केवल अभिव्यक्त कर रहे है, बल्कि उन परसंवेगों पर नियत्रण भी नहीं प्राप्त कर पा रहे है। संवेगों में नियंत्रण न होने से संवेगात्मक वृद्धि भी प्रभावित हो रही है। इसके अलावा विद्यार्थियों में मोबाइल की लत भी लग रही है। वही इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि विद्यार्थियों के विकास में संवेगों का अत्यधिक महत्व है।

कीवर्ड - संवेग संवेगात्मक ,नियंत्रण ,स्मार्ट फोन ,वृद्धि

प्रस्तावना

अक्टूबर, 2020 में प्रकाशित वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर)-2020 चरण-1 (ग्रामीण) का उल्लेपख करते हुए समीक्षा में कहा गया है कि ग्रामीण भारत में सरकारी और प्राइवेट स्कूलों में नामांकित विद्यार्थियों के पास स्मार्ट फोन की संख्या में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। 2018 में 36.5 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास ही स्मार्ट फोन थे, वहीं 2020 में 61.8 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास स्मार्ट फोन मौजूद थे। समीक्षा में सलाह दी गई है कि उचित उपयोग किया गया तो शहरी और ग्रामीण, लैंगिक, उम्र और आय समूहों के बीच डिजिटल भेदभाव और शैक्षिक परिणाम में अंतर समाप्त होगा।

किसी भी बच्चे के जिन्म सिर्फ सामान्य उत्तेजन ही पाया जाता है। जैस-जैसे वह अपने जीवन में आगे बढ़ता जाता है,उसमें परिपक्वता का विकास होता है।इसके अलावा भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यवहारों को सीखने का अवसर भी प्राप्त होता है। विद्यार्थी जीवन में बच्चा नवीन संवेगों को अभिव्यक्त करना और उन पर नियत्रण करना सीखता है। यही नियत्रण जीवन के समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन करता है। संवगों पर नियत्रण करना संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा ही प्राप्त होता है। यदि विद्यार्थी जीवन में संवेगों पर नियत्रण न हो पाये तो बच्चे आक्रामता की ओर बढ़ जाते है। ऐसे बच्चे आक्रामण स्वभाव के हो जाते है। यही वजह है कि संवेगात्मक वृद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका विद्यार्थी जीवन में होती है। वैसे भी मानव एक बौद्धिक प्राणी है,परंतु मानव का अधिकतर व्यवहार बुद्धि से नहीं बल्कि संवेदों से परिचलित होता है।यही कारण है कि मानव विकास में संवेगो में अत्यधिक महत्व है।

स्टेन ने कहा है कि वृद्धि जीवन की नवीन समस्याओं और परिस्थितियों के साथ अनुकूल करने की सामान्य योग्यता है।

वैश्विक महामारी कोविड-19 के बाद विद्यार्थियों की शैक्षणिक गतिविधियों में परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तन में विद्यार्थी अब आनलाइन एजूकेशन पर निर्भर हो गये है। महामारी के कारण में स्कूलों में पढ़ाई ठप्प है। अब विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम भी आनलाइन शिक्षा के माध्यम से ही पूरे कराये जा रहे है। भारत जैसे देश में आनलाइन एजूकेशन की इसके पहले कोई खास व्यवस्था नहीं थी। विद्यार्थियों को जरूरत महसूस होने पर मोबाइल का विकल्प चुना गया। यही वजह है कि मोबाइल उपयोग करने वालों की संख्या में महामारी के बाद तेजी से इजाफा हुआ है। मोबाइल के लगातार प्रयोग से विद्यार्थियों में मोबाइल की लत लग रही है। पढ़ाई के अलावा विद्यार्थी अन्य साइट पर जाने के लिये मोबाइल का उपयोग कर रहे है। कई कार्यक्रमों के देखने,गेम खेलने और अन्य कार्यक्रमों की वजह से विद्यार्थियों के संवेगों में परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

आईसीएआई के मुताबिक, भारत की 130 करोड़ की आबादी में से क़रीब 45करोड़ लोगों के पास ही स्मार्टफ़ोन है।इसका मतलब ये कि आधी आबादी से ज़्यादा लोग बिना

स्मार्टफ़ोन के हैं। कहीं-कहीं पाँच छह लोगों के परिवार में सिर्फ़ एक स्मार्टफ़ोन होता है। ऐसे में अगर एक घर में दो बच्चे हैं जिन्हें सुबह से लेकर दोपहर तक ऑनलाइन पढ़ाई करनी है, तो उन्हें दो फ़ोन की जरूरत महसूस होती है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों में तनाव बढ़ रहा है। यह तनाव भी संवेगों में परिवर्तन कर रहा है। तनाव, लत, चिंता, पढ़ाई का दबाब के साथ ही संवेगों में परिवर्तन से आक्रामता में वृद्धि हो रही है।

शोध की आवश्यकता और महत्व

आज की विद्यार्थी कल का नागरिक है। विद्यार्थी जतना श्रेष्ठ होगा, उतना ही मजबूत राष्ट्र होगा। बच्चों में यदि विद्यार्थी जीवन में ही आत्मनिर्भरता, सहयोग और नैतिकता की भावना का विकास कर दिया जाये तो शिक्षा पूरी होने के बाद सामाजिक जीवन में वही विद्यार्थी आदर्श नागरिक साबित हो सकता है। विद्यार्थियों तो आदर्श नागरिक बनाने में शिक्षा और शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है।किसी भी देश की जनता का स्तर उनकी शिक्षा के स्तर और शिक्षा प्रणाली से ही माफा जाता है। कोरोना महामारी के कारण वैसे तो हर सेक्टर प्रभावित हुया है,लेकिन शिक्षा सबसे ज्यादा प्रभावित हुयी है। पिछले एक साल से भी ज्यादा का समय हो गया,शिक्षण संस्थान खुल नहीं पाये। कुछ खुले तो शिक्षण कार्य पहले की तरह नहीं हो पाया है। वैश्विक महामारी के कारण शिक्षा व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालित करने के लिये ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अपनाया जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यस से पाठ्यक्रम पूरा करने किया गया है। ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था के कारण मजबूरी में ही सही,लेकिन अभिभावकों को विद्यार्थियों को स्मार्ट फोन देने के लिये मजबूर होना पड़ा। इलेक्ट्रानिक डिवाइज विद्यार्थियों के हाथ में आने के बाद इसके परिणाम और दुष्परिणाम दोनों देखने में मिल रहे है। इन दुष्परिणामों के बारे में ही प्रस्तुत शोध में गहनता से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। ताकि इस शोध से प्राप्त होने वाले परिणामों से समाज को जागरूक किया जा सकें।

भारत में फोन और इंटरनेट का उपयोग

भारत में कुल इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 63.67 करोड़ है। इनमें शहरी क्षेत्र में 40.97 करोड़ और ग्रामीण क्षेत्र में 22.70 करोड़ लोग इंटरनेट चलाते हैं। देश में टेलीफोन घनत्व की बात करें तो प्रति 100 की आबादी पर 90.11 टेलीफोन यूजर्स हैं। इनमें 88.46 मोबाइल और 1.65 लैंड लाइन यूजर्स हैं। सबसे ज्यादा टेलीफोन वाला राज्य दिल्ली है। जहां घनत्व 174.8 है। देश के शहरी हिस्से में लोगों में 100 में 155.49 के पास मोबाइल कनेक्शन हैं। जबकि ग्रामीण भारत में ये आंकड़ा 57.13 का है। लैंडलाइन के मामले में शहरी क्षेत्र में 4.46 और गांव में 0.34 टेलीफोन कनेक्शन हैं। देश में कुल इंटरनेट इस्तेमाल करने

वालों की संख्या 63.67 करोड़ है। इनमें शहरी क्षेत्र में 40.97 करोड़ और ग्रामीण क्षेत्र में 22.70 करोड़ लोग इंटरनेट चलाते हैं।

मोबाइल यूजर्स की संख्या

टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) के आंकड़ों के मुताबिक, भारत में मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या 115.14 करोड़ से ज्यादा है। जबकि 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की वयस्क आबादी करीब 108.85 करोड़ है। ट्राई के मुताबिक, मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या के मामले में यूपी टॉप पर है। यहां 16.85 करोड़ से ज्यादा मोबाइल यूजर्स हैं।

क्रमांक	प्रदेश	मोबाइल यूजर्स(करोड़ में)
01	उत्तरप्रदेश	16.85
02	महाराष्ट्र	9.26
03	आंध्रप्रदेश	8.70
04	बिहार	8.43
05	तमिलनाडू	8.18
08	मध्यप्रदेश	7.48
09	गुजरात	6.74
10	राजस्थान	6.53
11	पश्चिम बंगाल	5.52
12	पंजाब	3.91
13	हरियाणा	2.77

मोबाइल का विद्यार्थियों पर दुष्प्रभाव

बच्चों में मोबाइल फोन के उपयोग के कई दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार से है।

1. तंत्रिका विकार-मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन को काफी बच्चों के लिए काफी हानिकारक माना गया है।जिसमें तंत्रिका संबंधी समस्याएं भी शामिल हैं।इसके कारण चलने, बोलने, सांस लेने, निगलने और सीखने की क्षमता में कमी देखी जा सकती है।
2. फिजियोलॉजिकल एडिक्शन-फिजियोलॉजिकल एडिक्शन की समस्या को हम किसी भी भौतिक वस्तु के प्रति रुझान कह सकते हैं। सरल शब्दों में इसे लत कहना गलत नहीं होगा। लत लगने के बाद बच्चों को खाने-पीने और सोने तक का होश नहीं रहता।
3. मानसिक विकास में कमी -मोबाइल फोन का एक दुष्प्रभाव यह भी है कि इससे बच्चे का मानसिक विकास बाधित हो सकता है। कारण यह है कि मोबाइल की लत के कारण बच्चा और किसी भी काम में ध्यान नहीं देता। वहींसमाजिक और व्यवहारिक रूप से भी वह लोगों से नहीं जुड़ पाता।
4. अनिद्रा की समस्या -बच्चे मोबाइल में गेम खेलते हैं। नई-नई चीजें देखते हैं। आज-कल तो कार्टून और अन्य कार्यक्रम भी उन्हें मोबाइल पर ही मिल जाते हैं। इनमें अधिक रूचि होने के कारण वो देर रात तक जागते रहते हैं।
5. व्यवहार में बदलाव-बच्चे के द्वारा मोबाइल फोन का लगातार उपयोग उसके व्यवहार में बदलाव का भी कारण बन सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसा माना गया है कि मोबाइल की लत बच्चे में किसी अन्य काम में उसका ध्यान केंद्रित नहीं होने देती।
6. कैंसर का खतरा : बच्चों पर मोबाइल के पड़ने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित एक शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि मोबाइल से निकलने वाला रेडिएशन कैंसर का कारण बन सकता है। साथ ही ब्रेन ट्यूमर के लिए भी जिम्मेदार हो सकता है।
7. सिर दर्द : कई मामलों में ऐसा देखा गया है कि मोबाइल का अधिक समय तक उपयोग करने वाले बच्चों में सिरदर्द की समस्या हो जाती है।
8. डिप्रेशन और शॉर्ट टेंपर : मोबाइल के इस्तेमाल के संबंध में इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि बच्चों में मोबाइल के अधिक उपयोग से डिप्रेशन और जल्द गुस्सा आने की समस्या भी पनप सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये है।

1. उच्च माध्यमित स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का आंकलन करना।
2. संवेगों में परिवर्तन होने से विद्यार्थियों पर पड़ रहे प्रभावों का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और संवेगों के बीच प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पानायें

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और संवेगों की प्रभावशीलता के बीच सार्थक संबंध नहीं है।
2. स्मार्ट फोन के उपयोग से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और मोबाइल की लत के बीच में अंतसंबंध है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विवणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया है। शोध के लिये 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। सभी चयनित किये गये विद्यार्थी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन प्रणाली से किया गया है।

प्रस्तुत शोध में निर्धारित चर-संवेगात्मक वृद्धि और मोबाइल की लत को निर्धारित किया गया है।

शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर-सवेगात्मक वृद्धि

परंत्रत चर-विद्यार्थी प्रभावशीलता

शोध य़ोजना - प्रस्तुत शोध में पालीभीत के अलग-अलग 200 विद्यार्थियों (बालक और बालिकाओं) का चयन प्रस्तुत शोध के लिये किया गया है।

तालिका क्रमांक 01 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक वृद्धि का अध्ययन

क्र.	चर	संख्या	लिंग	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	D	OD	CR	सार्थकता
01	संवेगात्मक वृद्धि	100 100	बालक बालिकायें	128.4 130.30	10.4 13.82	4.28	1.874	1.75	सार्थक अंतर नहीं
स्वंतंत्रता का अंश+=198,N=200 सार्थकता अंतर-0.05									

परिणाम का विश्लेषण- उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है किC.R. का मान 1.75 है,जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 198 पर C.R. के सारणीमान 1.98 से कम है। अत: शोध की शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक वृद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्रमांक - 02 विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन का अध्ययन

शैक्षणिक विधि	मध्यमान	प्रमाणिक प्रचलन	प्रमाणिक प्रचलन	क्रांतिक अनुपात
1-परंपरागत विधि	100	10.38	4.96	3.62
2-ऑनलाइन(स्मार्ट फोन से शिक्षा)	100	12.84	4.65	

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर परंपरागत शैक्षणिक विधि और ऑनलाइन शिक्षण विधि के प्राप्ताकों के मध्यमानों के बीच क्रांतिक अनुपात 3.63 प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.01 सार्थक स्तर की टंसनम .60 से कम है। अत सार्थक अंतर यह प्रदर्शित करता है कि पंरपरागत प्रतिमान विधि से शैक्षणिक कार्य करने पर शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर ऑनलाइन (स्मार्ट फोन से) से प्राप्त शैक्षणिक उपलब्धि से बेहतर है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों से स्पष्ट है कि शोध की शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक वृद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

इसी प्रकार से शोध के निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि, ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से भले ही विभिन्न कक्षाओं(जैसे उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं) के पाठ्यक्रम पूरे करने के दावे किये जायें। विभिन्न स्कूलों में पाठ्यक्रम पूरे भी किये जा रहे है। शुरुआती दौर में स्कूलों में आनलाइन शिक्षा प्रदान करने के रास्ते में अनेक व्यावहारिक बाधाएं आई हैं, जैसे सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन, कंप्यूटर, लैपटाप या टैबलेट की सुविधा न होना, इंटरनेट, ब्राडबैंड का सुचारू रूप से उपलब्ध न होना, डाटा स्पीड नहीं मिलना, आनलाइन शैक्षिक टूल्स की जानकारी न होना, पुस्तकालयों का डिजिटल न होना, ई-कंटेंट का उपलब्ध न होना आदि। चूंकि डिजिटल शिक्षा को पाने के लिए लोगों को कई उपकरणों को लेना होता है, जो काफी महंगे पड़ते हैं। ऐसे में घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने के लिए टैबलेट, पीसी, प्रोजेक्टर, इंटरनेट और विशेषकर सस्ता डाटा और हाई स्पीड इंटरनेट की बहुत जरूरत होती है। वर्तमान में ये सभी सुविधाएं काफी महंगी साबित हो रही हैं। यही कारण है कि डिजिटल शिक्षा देने वाले अधिकांश स्कूल नियमित स्कूलों की तुलना में अधिक महंगे होते हैं। इसी कारण डिजिटल शिक्षा पाना हर किसी के बस की बात नहीं होती। पारंपरिक किताबी शिक्षा से घर हो या स्कूल कहीं भी पढ़ाई कर सकते हैं। जबकि डिजिटल

शिक्षा के लिए न केवल स्कूल में, बल्कि घर में भी सस्ते ब्राडबैंड में उचित आधारभूत संरचना की जरूरत होती है। वहीं डिजिटल शिक्षा के तहत सीखने के लिए बेहतर प्रबंधन और कठोर योजनाओं की जरूरत होती है। यह जरूर संभव है कि विद्यार्थियों और शिक्षकों की संख्या का कुछ प्रतिशत समय की मांग को देखते हुए भविष्य में कंप्यूटर, लैपटाप इत्यादि संसाधन खरीद भी ले, क्योंकि स्मार्टफोन के ही द्वारा पढ़ाई करना संभव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल श्वेता (2012) - अनुदानित एवं गैर अनुदानित उ.मा.वि. के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा चिंतन, त्रिमूर्ति संस्थान, नोएडा, अंक-पृष्ठ सं. 14-22
2. शर्मा आ.ए. (2005) अनुसंधान विधियां, सूर्या पब्लिकेशन्स, आर. लाल बुक डिपो मेरठ पृष्ठ सं. 190-206
3. चतुर्वेदी, राजेश और सिंह सीमा (2019) छात्राध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि और स्वप्रत्यय के मध्य संबंधों का अध्ययन, परिप्रेक्ष्य वर्ष (16) (2) नई दिल्ली।
4. शर्मा डी.पी.एल. एवं शर्मा डॉ. वाई के (2008) दार्शनिक अनुसंधान में सर्वेक्षण विधियां, जयपुर अजमेर युनिवर्सिटी प्रथम संस्करण पृ.सं. 130।
5. जायसवाल, विजय और गुप्ता प्रियंका (2011) नियमित शिक्षक शिक्षिकाओं का शिक्षामित्रों के मानसिक स्वस्थ्य के संबंध में उनकी शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन पृ.सं. 31-42।
6. नंदा, पी एण्ड पान्नू जी (2005) इमोशनल स्टेबिलिटी एण्ड सोसियो पर्सनल फैक्टर्स, इंडियन जनरल आफ साईकोमेट्री एण्ड एजुकेशन।